

# अक्रम यूथ

दिसम्बर २०१७ | हिन्दी

दादा भगवान परिवार

₹ २०

## ब्रह्मचर्य



# अनुक्रमणिका

०४ विषय की आत्मकथा

०६ अतिरेक विषय भोग की खतरनाक असरें

०७ ब्रह्मचर्य क्या है?

०८ प्रकट गुण ब्रह्मचर्य की साधना से

१० ब्रह्मचर्य को वैज्ञानिक दृष्टि से देखते हैं

११ Q & A

१२ महान पुरुष की झाँकी

१४ ज्ञानी विद यूथ

१६ ज्ञानी आश्चर्य की प्रतिमा

१८ दादाश्री के पुस्तक की झलक

२१ अनुभव

२२ महानुभाव, जिनका जीवन ब्रह्मचर्य के प्रभाव से खिला



You need to download QR Code Scanner App from Play store or iTunes Store

Visit : <http://youth.dadabhagwan.org/Gallery/Akram-Youth>

Download free ebook / PDF versions of all Akram Youth issues by scanning this QR code

संपादक : डिम्पल मेहता

वर्ष : ५, अंक : ८

अखंड क्रमांक : ५६

दिसम्बर २०१७

संपर्क सूत्र :

ज्ञानी की छाया में,

त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,

अहमदाबाद-कलोल हाइवे,

मु.पो. - अडालज,

जिला : गांधीनगर-३८२४२१, गुजरात

फोन : (०७९) ३९८३०१००

email: [akramyouth@dadabhagwan.org](mailto:akramyouth@dadabhagwan.org)

website: [youth.dadabhagwan.org](http://youth.dadabhagwan.org)

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj -

382421. Dist- Gandhinagar

Owned by

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj -

382421. Dist- Gandhinagar

Printed at

Amba Offset

Basement, Parshvanath

Chambers, Nr. RBI,

Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj -

382421. Dist- Gandhinagar

कुल २४ पेज कवर पेज सहित

सदस्यता शुल्क

वार्षिक

भारत : १२५ रुपए

यू.एस.ए. : १५ डॉलर

यू.के. : १० पाउन्ड

पाँच वर्ष

भारत : ५०० रुपए

यू.एस.ए. : ६० डॉलर

यू.के. : ४० पाउन्ड

D./M./O. महाविदेह फाउन्डेशन के

नाम पर भेजें



# संपादकीय

इस बार, हम लहरों की विरुद्ध दिशा में तैरने जैसा एक विशेष अनुभव करने जा रहे हैं। इस अंक में हम “ब्रह्मचर्य” नामक एक शक्तिशाली हथियार विषय के बारे में चर्चा करेंगे, जो कि हमें सांसारिक समस्याओं का मूल ऐसे अब्रह्मचर्य के गहरे गड्ढे में गिरने से रोकता है। हमारी प्राचीन संस्कृति में भी ब्रह्मचर्य को महत्व को प्राधान्य दिया गया है। आश्रम व्यवस्था में (उम्र के अनुसार जीवन को चार भाग में), पहला आश्रम (जन्म से युवावस्था तक की उम्र), ब्रह्मचर्याश्रम (ब्रह्मचर्य आश्रम) कहलाता है। युवावस्था में ब्रह्मचर्य के लिए अनुशासन, मार्गदर्शन और शुद्धता होना आवश्यक है।

हर एक धर्म में ब्रह्मचर्य स्वीकार होने पर भी सही ज्ञान के अभाव के कारण हम असहाय होकर असंयम के भँवर में फँस जाते हैं। इस काल के प्रवाह के कारण पूरा दिन अब्रह्मचर्य से संबंधित सामग्रियों का अविरत प्रभाव पड़ता ही रहता है, लेकिन उसमें कुछ गलत है ऐसा कोई सोचता ही नहीं है। अब्रह्मचर्य के परिणाम कितने नुकसानदेह हैं, इससे आज का युवा वर्ग अन्जान है। पूज्य दादाश्री अब्रह्मचर्य को गंदगी का ढेर कहते थे। अब्रह्मचर्य का भ्रामक आनंद भोगने में बड़े-बड़े संत और गुरु भी अध्यात्म के शिखर से गहरी खाई में गिर चुके हैं।

यदि युवावस्था में ध्यान, पढ़ाई और करिअर पर केन्द्रित करके, उस ओर पुरुषार्थ किया जाए तो निश्चितरूप से सफलता मिलेगी। इसीलिए ब्रह्मचर्य की प्रचंड शक्ति को पहचानकर अपने हिताहित का ध्यान रखने के लिए हम इस संवेदनशील विषय से संबंधित अनेकों मान्यताओं-गैरमान्यताओं को समझेंगे ताकि युवावर्ग विषय-विकार के भ्रामक आनंद के भँवर में फँसने से पहले एक बार ज़रूर सोचें...

-डिम्पल मेहता



# मैं हूँ “विषय”

मुझमें दया नाम की चीज़ नहीं है। मेरे शिकार का क्या होगा, इसकी मुझे परवाह नहीं, यह मेरा काम नहीं है।

मुझे तो आप पहचानते ही होंगे। महाशक्तिशाली, भयंकर दैत्यों का वंशज ऐसा मैं, यानी “विषय”। मैंने कई महान व्यक्तियों को परास्त किया है। उनके मन में होते हुए भी, वे मेरी हाज़िरी नहीं समझ पाते। मेरे शिकार का क्या अंजाम होता है, उसकी परवाह करना वह मेरा काम नहीं है। मेरा काम तो ज्यादा से ज्यादा लोगों को विषयाग्नि में झोंक देना है।

मैं लोगों के मन में प्रवेश करके, उन्हें विषयकामी राक्षस बना देता हूँ। उनके सारे संबंध भुलाकर, उन्हें कुकृत्य करने के लिए प्रेरित करता हूँ। लोग बुद्धिविहीन हैं! मैं उन्हें आकर्षित करके छलता हूँ। भ्रष्ट करता हूँ। मेरा नशा ऐसा होता है कि जिसके लिए वह व्यक्ति भीख माँगने के लिए लाचार हो जाता है और हर जगह मुझे ही ढूँढ़ता रहता है। अकेले व्यक्ति को देखकर मेरी शक्ति दुगनी हो जाती है, इसीलिए मैं उन्हें एकांत की ओर जाने के लिए प्रेरित करता हूँ।

मैं अति पराक्रमी और शक्तिशाली रावण को छल पाया। उसके घमंड को चूर करने के लिए मैंने ही उससे सीताहरण करवाकर उसके अंत को आमंत्रित किया। भले ही, ऋषि विश्वामित्र ने अपनी तपस्या के बल पर ब्रह्मर्षि पद प्राप्त किया लेकिन एक बार तो मैंने उन्हें अप्सरा मेनका के सौंदर्य में फँसाकर, उनका ब्रह्मचर्य डिगा दिया था। बड़े-बड़े राजा और मंत्रियों ने मेरे वश होकर राजपाट और सत्ता गँवा दी है। मेरे प्रभाव से तो इन्द्र-महेन्द्र भी बच नहीं सके। अधिकांश अपराधी मेरे पराक्रम के शिकार हैं। भूतकाल में हुए कई युद्धों का कारण भी मैं ही हूँ।

कितने ही ब्रह्मचारियों के चित्त का हरण करने में मैं सफल हुआ हूँ। जो मन के अधीन ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, उन्हें तो मैंने कब का वश में कर लिया है। लेकिन जो मन के अधीन नहीं और ज्ञानी के अधीन हैं, उन ब्रह्मचारियों को मैं हरा नहीं सकता। फिर भी मैं बिना हारे, उनके मन में प्रवेश करने की कोशिश ज़रूर करता हूँ लेकिन उनकी साधना का अमृत मेरी कामाग्नि की विंगारी को तुरंत ही बुझा देता है। इसीलिए मेरे वश में आए हुए लोगों को मैं ज्ञानी के पास जाने से रोकता हूँ। जिन पर मेरा हक है ऐसे शादी-शुदा लोगों के लिए भी इस काल में ज्ञानी ने ब्रह्मचर्य का मार्ग खोल दिया है। मैं पूरे जगत् को वश करता हूँ लेकिन सिर्फ ज्ञानी मुझे वश में कर चुके हैं। ज्ञानी के प्रभाव से मैं खत्म होने लगता हूँ।

लेकिन मैं ऐसे हार नहीं मानूँगा। मौके की तलाश में मैं घूमता रहूँगा और पूरे जगत् को अपने शिकंजे में लेकर ही रहूँगा।

## अब मुझे ठीक से पहचाना न ?

## विषय का प्रणाम !



# अतिरेक विषय भोग की खतरनाक असरें

अब्रह्मचर्य का विषय सभी प्रकार के सुखों को निष्प्राण और निरुत्साही बनाने वाला है। इस सुख को भोगने में कई प्रकार के पाप होते हैं और लाचारी, बंधन, गुलामी, खराब मानसिकता, मलिन इच्छाएँ, दुर्बलता, अतिशय मेहनत और थकान, मानसिक अशांति, अनैतिकता का अनुभव होता है। जैसे गली के कुत्तों को चाहे कितने भी पत्थर मारें फिर भी वापस आँगन में आकर खड़े हो जाते हैं (रोटी के टुकड़े के लालच में), इसी प्रकार संसारी मनुष्यों को अलग-अलग जगह से भरपूर मात्रा में मार पड़ने पर भी, धक्के खाने पर भी, परेशानियाँ सहने पर भी, वे सही समझ (ब्रह्मचर्य) की ओर नहीं बढ़ते।

पश्चिम के मशहूर डॉक्टरों ने निष्कर्ष निकाला है कि, वीर्य के स्वलन से, मुख्यतः छोटी उम्र में, कई प्रकार के रोग हो जाते हैं, जैसे कि शरीर पर फुली होना, चेहरे पर मुहाँसे होना, आँख के नीचे गह्वे होना, आँखों का अंदर की ओर धँसना, खून की कमी से चेहरा फीका पड़ जाना, आँखों से कम दिखाई देना, किडनी का कमजोर होना, प्रजनन अंगों में विषमता, कमर दर्द, सिर और जोड़ों में दर्द इत्यादि। इसके अलावा यादशक्ति कम होना, कमजोरी लगना, थकान लगना, आलस होना, हताशा अनुभव करना, हृदय की धड़कनें बढ़ जाना, जैसे परिणाम उत्पन्न होते हैं। अधिकांश रोग वीर्य के अतिशय दुर्व्यय की वजह से होते हैं।

विषय भोग से पैदा होने वाली हानिकारक असरों को ध्यान से समझें! बिना कारण, बार-बार वीर्य शक्ति को बर्बाद करने वाले शारीरिक, मानसिक और नैतिक दुर्बलता अनुभव करते हैं। उसके मन, शरीर

और बुद्धि, स्फूर्ति पूर्वक काम करने के लिए तैयार नहीं होते। उसके फल स्वरूप शारीरिक और मानसिक शक्ति दिनोंदिन क्षीण होती जाती है और बोरियत, नीरसता और हताशा का अनुभव होता है। आज की युवा पीढ़ी वीर्य के महत्त्व से अन्जान होने की वजह से, असंयमित विषय के नशे में अपनी बर्बादी को न्योता दे रहे हैं! जिसमें आत्मा का घात होता है।

एक बार के विषय भोग में खर्च होने वाली शक्ति, दस दिन के शारीरिक या तीन दिन के बौद्धिक काम के बराबर होती है। एक बार के विषय भोग से बुद्धि और चेता तंत्र एकदम बिगड़ जाता है। वीर्य बहुत ही कीमती है, इस शक्ति को बर्बाद करने जैसा नहीं है। एक बार उसका व्यय होने के बाद किसी भी प्रकार से उसे फिर प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसलिए यदि उसको सँभालकर संचय करेंगे, तो शरीर में अद्भुत उत्साह और शक्ति का संचार होगा।

**यदि वीर्य का खर्च नहीं किया जाए तो, उसका सत्व आध्यात्मिक शक्ति में परिणमित होता है और दिमाग में इकट्ठा होता है। इस दिव्य शक्ति के संचय से इच्छाशक्ति प्रबल होती है और आध्यात्मिक उन्नति होती है, जो अंत में मोक्ष की प्राप्ति करवाती है।**

# ब्रह्म + चर्य =

ब्रह्मचर्य का आध्यात्मिक अर्थ :

“ब्रह्म” अर्थात् “आत्मा” और “चर्य” अर्थात् “रमणता”।  
आत्मा में रमणता करना वही ब्रह्मचर्य।

कई लोग ऐसा मानते हैं कि सिर्फ कुँवारा रहना ही ब्रह्मचर्य है। लेकिन ब्रह्मचर्य सिर्फ जातीय इन्द्रियों पर नियंत्रण नहीं, बल्कि विचार, वाणी और वर्तन से सभी इन्द्रियों पर नियंत्रण, जो कि मोक्ष प्राप्त करने के लिए पहली शर्त है।

कलियुग के इस दुषम काल में, “अक्रम विज्ञान” द्वारा यह अदभुत पराक्रम संभव है! आज के इस काल का वातावरण, विषय के प्रबल और अनंत स्पंदनों से भरा हुआ है, ऐसे में ज्ञानीपुरुष की वाणी व्यक्ति को समझ पूर्वक ब्रह्मचर्य में रखती है।

अक्रम विज्ञान की सहायता से जो ऐसे ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, वे अधिक से अधिक सोलह जन्मों में मोक्ष गति को प्राप्त करते हैं।

प्राचीन काल में कई महान ब्रह्मचारी हो गए हैं। जैसे कि,

हनुमान जी, जो ब्रह्मचर्य का पालन करने से अप्रतिम शक्तिवान बने तथा अनेक पराक्रम करके “महावीर” पद को प्राप्त हुए।

भीष्म पितामह, जो पांडवों और कौरवों के दादा थे, उन्होंने ब्रह्मचर्य से मृत्यु पर विजय प्राप्त की थी।

भगवान राम के भाई, लक्ष्मण, एक आदर्श ब्रह्मचारी थे, उन्होंने महान वीर, अजय ऐसे रावण पुत्र-मेघनाथ को पराजित किया था।

महाराजा पृथ्वीराज जिनकी महानता और वीरता के पीछे का मुख्य कारण सिर्फ ब्रह्मचर्य ही था।

स्वामी विवेकानंद जी, जो ब्रह्मचर्य के प्रताप से पूरे विश्व में हिन्दुस्तान का डंका बजाने में सफल हुए थे।

इन तीनों लोक में ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो ब्रह्मचारी प्राप्त नहीं कर सकता। प्राचीन ऋषि ब्रह्मचर्य की कीमत बहुत अच्छी तरह जानते थे और इसीलिए उन्होंने ग्रंथों में ब्रह्मचर्य की महिमा का वर्णन किया है।

ब्रह्मचर्य



प्रकटें  
गुण

ब्रह्मचर्य की साधना से



१. **अंतः स्फूर्णा और अंतर सूझ** : ब्रह्मचर्य के पालन से मन और बुद्धि की क्षमता और धारण शक्ति, विपुल प्रमाण में बढ़ती है। नया समझने की और ग्रहण करने की शक्तियाँ खिलती हैं और चीज़ों एवं परिस्थितियों को अंतर सूझ के द्वारा जल्दी समझा जा सकता है।

२. **हिम्मत और निडरता** : ब्रह्मचर्य से ज्यादातर भय खत्म हो जाता है और भयजनक परिस्थिति में भी निडर और अडिग बनाता है। ऐसी परिस्थिति में संकट पहचानकर, बिना घबराए, परिस्थिति बहुत बिगड़े नहीं इस प्रकार उसका हल लाया जा सकता है।

३. **आनंद और संतोष** : सच्चे आनंद और संतोष की अनुभूति होने के कारण इन्द्रिय सुखों के प्रति विकर्षण और अरुचि उत्पन्न होती है। कभी-कभी तो सुख का अनुभव ऐसा अदभुत होता है कि किसी विनाशी चीज़ में रुचि ही नहीं रहती। यह आनंद शुद्ध और उच्च कोटि का होता है।

४. **यादशक्ति** : चीज़ों को याद रखना सरल हो जाता है और भूली-बिसरी यादें और स्वप्न भी आसानी से ताज़ा हो जाते हैं।

५. **रोग प्रतिकारक शक्ति** : ब्रह्मचर्य के पालन से, संचित ऊर्जा और ताकत ज्यादा होने से शरीर की रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ जाती है।

६. **चिंतामुक्ति** : अधिकांश चिंताएँ दूर हो जाती हैं जिससे किसी भी परिस्थिति का हल लाना आसान हो जाता है।

७. **शांति और स्वस्थता** : अंदर अवर्णनीय शांति का अनुभव होता है और धीरज रखने की शक्ति बढ़ जाती है।

८. **लचीलापन और चपलता** : शरीर का लचीलापन (फ्लैक्सिबिलिटी) और चपलता बढ़ जाती है।

९. **आत्मविश्वास** : आत्मविश्वास और उत्साह में वृद्धि हो जाती है और शर्मीलापन दूर होकर सहज बन जाते हैं। लेकिन आत्मविश्वास बढ़ने से अभिमान खड़ा न हो जाए उसका ध्यान रखना है।

१०. **गुस्सा और चिड़चिड़पन का अभाव** : ब्रह्मचर्य से आनंद, शांति और धीरज बढ़ता है। उससे गुस्सा और चिड़चिड़पन दूर हो जाता है। निरंतर ऐसा रहता है कि “सब ठीक है”।

# ब्रह्मचर्य को वैज्ञानिक दृष्टि से देखते हैं

मन, वचन, शरीर और इन्द्रियों के अब्रह्मचर्य से स्त्री और पुरुष दोनों के शरीर में से कई महत्वपूर्ण तत्व जैसे कि लेसिथिन, फोस्फोरस, नाइट्रोजन और आयोडिन इत्यादि का व्यय हो जाता है।

इस संदर्भ में “साइन्स ऑफ रिजनरेशन (नवजीवन का विज्ञान)” नामक पुस्तक में लेखक रेमन्ड बर्नाड लिखते हैं कि, विषय की वृत्तियाँ एन्डोक्राइन ग्रंथि के कारण उत्पन्न होती हैं, जो विषय संबंधित हार्मोन्स पैदा करती हैं और अन्य ग्रंथियों का संचालन भी करती हैं। युवाओं के खून में भरपूर मात्रा में विषय के हार्मोन्स होते हैं। जैसे-जैसे एन्डोक्राईन ग्रंथि के द्वारा विषय के हार्मोन्स का उत्पादन कम होता जाता है वैसे-वैसे वृद्धत्व और कमजोरी का अनुभव होता है। वीर्य उस शक्ति का भंडार है जिसका रक्षण और संचय करने से मनुष्य अपनी ताकत और जवानी लंबे समय तक टिकाकर रख सकता है। विषय की कल्पना मात्र से शक्ति का व्यय हो जाता है। विषयी लोग अपनी मानसिक स्थिरता जल्दी खोकर छोटी-छोटी बातों में विचलित हो जाते हैं। उनका मन और शरीर स्फूर्तिहीन बन जाता है। साथ ही थकान और आलस्य बढ़ते जाते हैं। वीर्य के अतिशय व्यय के कारण अकाल वृद्धत्व, नपुंसकता, कमजोरी, आँख और मज्जातंतु के रोग आदि शरीर में प्रवेश कर जाते हैं।





**प्रश्नकर्ता :** मैं बारहवीं कक्षा में हूँ। कक्षा में मेरा पहला रेन्क आता है। मेरी यादशक्ति भी बहुत अच्छी है। शारीरिक रूप से मुझे कोई बिमारी नहीं है। मैं स्वस्थ और तंदुरुस्त हूँ। मुझसे दृष्टि दोष हो जाते हैं। और ब्रह्मचर्य में इतना रह भी नहीं पाता। फिर भी मेरे पास इतना सब कैसे है?

**आमपुत्र :** ब्रह्मचर्य का पालन नहीं करते फिर भी पहला नंबर आता है, तुम्हारे पास यादशक्ति और अच्छा स्वास्थ्य है। वह पुण्य के हिसाब से हैं। लेकिन यदि अब्रह्मचर्य में पड़ जाओगे, कोई लफड़ा करोगे तो यह सब चला ही जाएगा और धारण शक्ति भी खत्म हो जाएगी। ब्रह्मचर्य का पालन नहीं करते इसका मतलब क्या? अब्रह्मचर्य ही है। जो कुछ भी मिलता है वह सब पुण्य के हिसाब से मिलता है। जो पुण्य लेकर आए हो उसकी वजह से सब होता है। यदि अब्रह्मचर्य होगा तो तुरंत तकलीफ नहीं होगी। लेकिन लंबे समय के बाद बहुत तकलीफें आएँगी ही और उसके परिणाम आएँगे ही। क्योंकि अणहक्क का भोगने गए, विषयों में से सुख लेने गए, तो उसके जोखिम भी बहुत सारे आएँगे और दावा भी करेंगे।

लोग जनरली क्या करते हैं कि, दो-तीन ऐसी चीजें ध्यान में रखते हैं कि इसका पहला नंबर आता है, कितने सारे दोस्त हैं, लड़कियाँ भी दोस्त हैं। तो लोकनिन्द्य होगा या नहीं? लोगों का प्रिय होगा? जितना पुण्य होता है उतना उसका चलता है फिर लोकनिन्द्य हो जाता है। फिर किसी को अच्छा नहीं लगेगा। बाद में चाहे पहला नंबर लाता हो, ऐसा आपको होता है या फिर उसके साथ घूमते रहना है? जूनियर है, अब्रह्मचर्य का पालन नहीं करता है, ऐसे ही मेहनत करता है, अन्य कषायों में नहीं पड़ा है तो हमें उसके साथ घूमने का मन होगा, उसका तुरंत पता चल जाता है। कुछ भी उल्टे काम करता हो न तो उसके पुण्य से चलता है, लेकिन उसका पुण्य हमेशा नहीं रहेगा। यदि इसमें पड़ा तो नुकसान शुरू हो जाएगा। सभी प्रॉब्लम्स शुरू हो जाएँगे।



# महान पुरुष की झाँकी

## महर्षि दयानंद सरस्वती

१९ वीं सदी के भारत के नवजागृति काल के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक व्यक्तियों में महर्षि दयानंद सरस्वती और स्वामी विवेकानंद का नाम आता है। उनके विचार प्राचीन भारत के धार्मिक, तात्विक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक परंपरा के थे। फिर भी उन्होंने पाश्चात्य प्रभावों को कुछ अंश तक अपनाने का प्रयत्न किया था।

उनके अनुसार शिक्षण का एक महत्त्व का हेतु विद्यार्थी का चरित्र निर्माण है। दोनों महानुभाव विद्यार्थी काल में ब्रह्मचर्य को अनिवार्य मानते थे। स्वामी दयानंद ने शील-सदाचार के कड़क नियम दिए हैं। जबकि स्वामी विवेकानंद ने भी ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणियों के लिए आदर्श चरित्र नियम दिए हैं। उन्होंने चारित्र निर्माण में मुख्य रूप से जातीयजीवन-विषयक विशुद्धि पर भार दिया है। तदुपरांत विविध गुण खिलें, अच्छी आदतें विकसित हों, आत्मश्रद्धा जागे उसके लिए अभ्यासक्रम के साथ चारित्र निर्माण के यम-नियम पर उन्होंने बहुत ज़ोर दिया है।

स्वामी विवेकानंद ने ज्ञानप्राप्ति का एकमात्र साधन “एकाग्रता” बताया है और उस एकाग्रता के लिए ब्रह्मचर्य को अनिवार्य बताया है। वे मानते हैं कि बारह साल के अखंड ब्रह्मचर्य से विद्यार्थी की कामशक्ति का आध्यात्मिक शक्ति में रूपांतर हो जाता है। वे मानते हैं कि विद्यार्थी के ब्रह्मचर्य पालन की सुरक्षा के लिए उन्होंने कन्या और कुमारों का अलग-अलग विद्यालय होना चाहिए।

## और स्वामी विवेकानंद

स्वामी दयानंद ने ठेठ अड़तालीस वर्ष तक के ब्रह्मचर्य को उत्तम ब्रह्मचर्य की तरह सराहा है, तो स्वामी विवेकानंद ने भी स्त्रीमठ में आजीवन ब्रह्मचारिणियों को माननीय स्थान दिया है। स्वामी दयानंद ने ब्रह्मचारियों को आठ प्रकार के मैथुन से बचने के लिए कहा है। वे ब्रह्मचर्य को स्मृति, आत्मसंयम, बुद्धि, शारीरिक और आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक मानते हैं।

दोनों महानुभावों ने आध्यात्मिक श्रेय, सामाजिक विवाह व्यवस्था, बच्चों का शिक्षण और चरित्र-निर्माण के लिए ब्रह्मचर्य को आवश्यक माना है। जो कि आध्यात्मिक शक्तियों का स्रोत हैं तथा योग साधना और ज्ञान प्राप्ति के लिए ज़रूरी हैं। आध्यात्मिक पुरुषों का सामर्थ्य उनके ब्रह्मचर्य की वजह से ही है।



“ ब्रह्मचर्य, नसों में बहती ज्वलंत

अग्नि की तरह होना चाहिए!

”







# ज्ञानी विद यूथ

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा लगता है कि इंटरनेट की आदत हो गई है। जब कभी संयोग मिल जाते हैं तो ऐसी भूल हो जाती है।

**पूज्यश्री :** आपके घर में इंटरनेट है?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, घर में नहीं है।

**पूज्यश्री :** जब बाहर मिल जाए तब हमें बहुत शक्ति माँगनी है। मन के कहे अनुसार चलना है या ध्येय के अनुसार चलना है?

**प्रश्नकर्ता :** ध्येय के अनुसार।

**पूज्यश्री :** मन तो होता है, टी.वी. देख लूँ, इंटरनेट देख लूँ। कुछ देख लूँ ऐसा मन ही होता है न? यदि मन के कहे अनुसार चलेंगे तो गड्ढे में गिरेंगे और ध्येय के अनुसार चलेंगे तो शिखर पर पहुँचेंगे।

हमें दादा से शक्ति माँगनी है और निश्चय करना है कि मुझे मन के कहे अनुसार नहीं चलना, और ब्रह्मचर्य पुस्तक एवं दसवीं आप्तवाणी में चेप्टर है “मन का चलता तन चले” पढ़ना और “किस प्रकार स्ट्रॉंग रहना है” वह निश्चय करना।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा निश्चय होता है, लेकिन जो सिन्सियरिटी आनी चाहिए वह नहीं आती।

**पूज्यश्री :** अब निश्चय करोगे तो आ जाएगी। और फिर हिसाब लगाना है, क्या? कि इतना उल्टा चलकर हम कितना समय बिगाड़ते हैं। शक्ति बिगाड़ते हैं। निश्चय करना, निकल जाओगे।

**प्रश्नकर्ता :** पूज्यश्री निकल सकें ऐसी शक्ति दीजिए।

**पूज्यश्री :** पाँच, पाँच, दस-दस, बीस, बीस बार शक्ति माँगना, “हे दादा भगवान! मुझे चाहे कैसे भी संयोग मिलें फिर भी मुझे ब्रह्मचर्य बिगाड़ने नहीं देना, पोल नहीं मारनी है, स्ट्रॉंग रहना है, मुझे ऐसी शक्ति दीजिए।

निकल जाओगे और फिर आप्तपुत्र के टच में रहना।

**प्रश्नकर्ता :** जय सच्चिदानंद पूज्यश्री, फाइल नंबर एक को नज़र पर कंट्रोल नहीं रहता और कोई लड़की आकर्षक कपड़े पहनकर आए तो देखे बिना नहीं चलता, रह नहीं पाता। सीधी-सरल भाषा में कहूँ तो स्त्री पर आकर्षण बहुत होता है और मुझे पता है कि उसमें कोई सुख नहीं है फिर भी बहुत आकर्षण होता है।

**पूज्यश्री :** जब आपकी आँखें खिंचें तब छट्टी कलम बोलना, “हे दादा भगवान!” मुझे किसी भी देहधारी जीवात्मा के प्रति, स्त्री-पुरुष या नपुंसक, कोई भी लिंगधारी हो...” ऐसा बोलते रहना है। मुझे निर्विकार रहने की शक्ति दीजिए। यह वाक्य बोल सकते हो। दादा भगवान के असीम जय जयकार... बोल सकते हो, हे दादा भगवान मैं निर्विकार रह सकूँ ऐसी शक्ति दीजिए। ऐसा सब बोलोगे तो वह लिंक टूट जाएगी। और फिर रोज़ रात को बैठकर प्रतिक्रमण करने हैं। और दूसरा भाग यह है कि, क्या हम पूरे दिन में किसी को दुःख देते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, कभी-कभी दे देते हैं।

**पूज्यश्री :** हाँ, उसके प्रतिक्रमण करवाने हैं, विषय और कषाय के। किसी को दुःख दिया हो, किसी पर दृष्टि बिगड़ी हो तो जब समय हो तब उस दोष की माफ़ी माँगते रहना, फिर नौ कलमें बोलना, नमस्कार विधि करना, अच्छे से सब प्रार्थना करना, इससे शक्ति बढ़ेगी।

**प्रश्नकर्ता :** पूज्यश्री निर्विकार रहने की शक्ति दीजिए।

# नीरू की प्रतिमा आश्चर्य की प्रतिमा

१९९७ में जब पहली बार नीरू माँ को देखा तभी से उनके प्रति आकर्षण रहने लगा था। मम्मी-पापा आने देंगे या नहीं यह सोचकर, जैसे सब भागकर शादी कर लेते हैं वैसे ही मैं किसी से कहे बगैर सीमंधर सिटी आ गई और समर्पित हो गई। नीरू माँ ने व्यवहार और निश्चय से हमारा गढ़न किया।

मैं सी.ए. (चार्टर्ड अकाउन्ट) में फेल हो गई थी, तो नीरू माँ ने कहा, “डरने की ज़रूरत नहीं है, तुझे आगे बढ़ना है। लड़कियाँ पढ़ाई करे, वह मुझे बहुत पसंद है, लड़कियों को पढ़ाई करनी ही चाहिए और स्वतंत्र बनना ही चाहिए”, इसलिए उनकी ऐसी भावना थी कि, “तू आगे की पढ़ाई करके सी.एस. (कंपनी सेक्रेटरी) की भी पढ़ाई कर। इसलिए मैंने उसकी भी पढ़ाई की। मुझे उनका बहुत सपोर्ट मिला। मेरे मम्मी-पापा और गार्ड जो भी कहो, सब “वो” ही थे। यहाँ पर मम्मी नहीं थीं, इसलिए प्रेम और हूँफ (सहारा) भी देते थे। अगर रात को देर तक काम करते थे, तो प्रसाद भी भेजते थे।

वे इतना ख्याल रखती थीं, फिर भी मुझे उनके नेगेटिव पोइन्ट्स दिखाई देते थे, मैंने उन्हें लिखकर दिए और कहा कि, “नीरू माँ, मुझे आपमें ऐसा दिखाई देता है। मुझे लग रहा था कि वे मुझे डाँटेंगी या निकालकर बाहर कर देंगी, लेकिन उन्होंने बहुत ही प्रेम और करुणा से कहा कि, “यह सब तो तेरी बुद्धि का है, जिसे हम नहीं मानते। हम तो आपका दिल देखते हैं।” और मैं इतनी गद्गद् हो गई कि उनका स्थान मेरे हृदय में और भी अँचा हो गया।

मैं नीरू माँ के साथ दो साल रही, वो दो साल मेरे जीवन की पूँजी समान हैं। जब मैं यहाँ आई, तब शुरू-शुरू में मुझसे बहुत सारी गलतियाँ हो जाती थी, लेकिन नीरू माँ प्रेम से समझाते थे। २००४ में बार-बार एक ही गलती मुझसे होती रहती थी, जिसके बारे में मैंने लिखकर नीरू माँ को दिया था और उन्होंने बहुत प्रेम से समझाया था। थोड़े समय के लिए सब कुछ अच्छा चलता रहा, लेकिन फिर वही गलती होने लगी, तब नीरू माँ ने मुझे बहुत ही अधिकारपूर्वक डाँटा और दूसरे ही क्षण करुणा बरसाते हुए कहा कि, “आप किसकी बेटियाँ हों? नीरू माँ की। फिर और क्या चाहिए आप लोगों को? पूरी दुनिया में न मिले ऐसी नीरू माँ आपको मिली हैं, फिर आप लोगों को और क्या चाहिए? किसलिए यह सब?” वे शब्द अंदर ऐसे उतर गए कि मुझे लगा कि इनके लिए तो मैं सब कुछ करके रहूँगी और मुझे लगा कि मानो उस गलती से मिलने वाली सीख से मैं कितनी सीढ़ियाँ उमर चढ़ गई।





# दादाश्री के पुस्तक की झलक



**विषय के विरुद्ध सावधान रहो...**

**प्रश्नकर्ता :** दादा, अब समझ में आता है कि हम यह गलत कर रहे हैं, फिर भी हो जाता है।

**दादाश्री :** फिर प्रतिक्रमण नहीं करते क्या?

**प्रश्नकर्ता :** करता हूँ। चंदू भाई गलत कर रहे हैं, लेकिन उस समय रोक नहीं पाता। बाद में तुरंत प्रतिक्रमण कर लेता हूँ। लेकिन एक बार तो एक सेकन्ड के अंदर बाज़ी पलट जाती है।

**दादाश्री :** सब गलत हो रहा है, उसमें हर्ज़ नहीं है। लेकिन सिर्फ विषय ही ऐसी चीज़ है कि जो आपका सब बिगाड़ सकता है, इसलिए हम कहते हैं कि सिर्फ विषय के बारे में सावधान रहें।

अभी भी गलतियाँ दिखाई नहीं देती, उसका कारण यह है कि, खुराक का ज्यादा से ज्यादा नुकसान यह है कि दो-तीन घंटों के लिए प्रमाद रहता है, लेकिन बाद में कम हो जाता है। जबकि इस विषय का कैफ़ पूरे दिन, चौबीस घंटे रहता है। इसलिए उसे गलती दिखाई ही नहीं देती। अतः जब विषय से निवृत्त हो जाएगा, तब गलतियाँ दिखाई देगी। वास्तविक गलतियाँ, बड़ी गलतियाँ जिन्हें सूक्ष्म कहा जाता है, यानी सिर्फ यही आधार बाधक है। जिसे जितनी जल्दी हो, उसके अनुसार प्रतिक्रमण करता रहे। उसमें ऐसा कुछ नहीं है कि ऐसा ही करना चाहिए।

## **उसके तो रोज़ के हज़ार-हज़ार प्रतिक्रमण!**

अभी तो सिर्फ आँख को सँभाल लेना है। पहले के लोग तो बहुत कठोर थे, आँखें ही फोड़ देते थे। हमें आँखें नहीं फोड़नी हैं, वह तो मूर्खता है। बल्कि हमें आँखें फेर लेनी हैं।

फिर भी अगर देख लें तो प्रतिक्रमण कर लेना है। एक मिनट के लिए भी प्रतिक्रमण चूकना नहीं है। खाने-पीने में उल्टा-सीधा किया होगा तो चलेगा। संसार का सब से बड़ा रोग यही है। इसी के कारण संसार खड़ा है। इसके आधार से संसार है। यही जड़ है। समझदारी पूर्वक काम निकाल लेना है। अगर कालेबाज़ार से माल लाए हों, तो कालेबाज़ार में ही बेचना पड़ेगा, लेकिन हमें कहना है कि प्रतिक्रमण करो। पहले प्रतिक्रमण नहीं करते थे इसलिए कर्म के तालाब भर गए थे, प्रतिक्रमण कर लिए यानी साफ कर लिया। ये प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान पाँचसौ-पाँचसौ, हज़ार-हज़ार बार करेंगे, तब जाकर काम बनेगा।

**संसार का सब से  
बड़ा रोग यही है।  
इसी के कारण  
संसार खड़ा है।**

# पश्चाताप सहित के प्रतिक्रमण

**प्रश्नकर्ता :** कई बार तो प्रतिक्रमण करने में ऊब जाते हैं, कितने सारे करने पड़ते हैं।

**दादाश्री :** हाँ, यह अप्रतिक्रमण का दोष है। उस समय प्रतिक्रमण नहीं किए, इसलिए आज ऐसा हुआ। अब प्रतिक्रमण कर लेंगे तो फिर से दोष नहीं होगा।

**प्रश्नकर्ता :** कपड़ा धुल गया, किसे कहते हैं?

**दादाश्री :** हमें खुद ही पता चल जाता है कि मैंने धो लिया, प्रतिक्रमण कर लेने से।

**प्रश्नकर्ता :** अंदर खेद (दुःख) रहना चाहिए?

**दादाश्री :** खेद तो रहना ही चाहिए न? जब तक इसका निबेड़ा न आए तब तक खेद तो रहना ही चाहिए। हमें तो देखते रहना है कि खेद है या नहीं। हमें अपना काम करना है, वह अपना काम करेगा।

**प्रश्नकर्ता :** यह सब बहुत चिकना है। उसमें थोड़ा-थोड़ा फर्क पड़ रहा है।

**दादाश्री :** जैसा दोष भरा होगा वैसा निकलेगा। लेकिन १२ साल में या १०-५ साल में सब खाली हो जाएगा, सारी टंकियाँ साफ कर लेंगे, फिर साफ! फिर मज़ा करो!

**प्रश्नकर्ता :** एक बार बीज डाल दिया हो तो रुपक में तो आएगा ही न?

**दादाश्री :** बीज तो डाल ही देते हैं न! वह रुपक में आएगा लेकिन जब तक गहराई में नहीं गया है तब तक कम-ज्यादा हो सकता है यानी मरने से पहले वह साफ हो जाएगा।

इसीलिए तो हम विषय के दोष वाले से कहते हैं न कि विषय के दोष हो गए हों, अन्य दोष हो गए हों, तो कहते हैं कि रविवार के दिन तू उपवास करना और पूरे दिन उसी बारे में सोच-सोचकर धोते रहना। ऐसे आज्ञा पूर्वक करने से कम हो जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** विषय-विकार से संबंधित सामायिक-प्रतिक्रमण किस प्रकार से करने हैं?

**दादाश्री :** अब तक जो गलतियाँ की हों, उनके प्रतिक्रमण करने हैं, भविष्य में गलतियाँ नहीं करूँगा, ऐसा निश्चय करना है।

**प्रश्नकर्ता :** जो भी दोष हो गए हैं, सामायिक में बार-बार वे ही दिखाई देते हों तो?

**दादाश्री :** जब तक दिखाई दें, तब तक उनकी क्षमा माँगनी है, क्षमा याचना करनी है। उस पर पश्चाताप करना है, प्रतिक्रमण करना है।

**प्रश्नकर्ता :** अभी सामायिक में बैठें और यह दिखाई दिया, फिर भी बार-बार क्यों आता है?

**दादाश्री :** वह तो आएगा न, अंदर परमाणु होंगे तो आएगा। उसमें आपको क्या परेशानी है?

**प्रश्नकर्ता :** आता है यानी अभी धुल नहीं गया है।

**दादाश्री :** नहीं, वह माल तो अभी काफी समय तक रहेगा। अभी दस-दस सालों तक रहेगा, लेकिन आपको सब निकाल देना है।

**प्रश्नकर्ता :** यह जो दो पत्तियाँ उगते ही उखाड़ने का विज्ञान है, कि विषय की ग्रंथि फूटे तब दो पत्तियाँ उगते ही उखाड़ देना है, तो जीत जाएँगे न?

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन विषय ऐसी चीज़ है कि अगर उसमें एकाग्रता करेंगे तो आत्मा भूल जाएँगे। यानी यह ग्रंथि नुकसानदेह है, वह इसीलिए कि जब ग्रंथि फूटती है तब एकाग्रता हो जाती है। एकाग्रता हुई इसलिए इसे विषय कहते हैं जबकि बिना एकाग्रता के विषय कह ही नहीं सकते! वह ग्रंथि फूटते ही इतनी ज्यादा जागृति रहनी चाहिए कि विचार आते ही उखाड़ कर फेंक दे, तो तब उसे एकाग्रता नहीं होगी। अगर एकाग्रता नहीं है, तो वहाँ विषय है ही नहीं वह गाँठ कहलाएगी और जब इस ग्रंथि का विलय होगा तब काम होगा।

# अनुभव



स्कूल लाइफ में मैं पढ़ाई में बहुत होशियार था। पहली से नौवीं कक्षा तक हमेशा मेरा प्रथम नंबर आता था। 90वीं कक्षा में मेरे 85% आए और मैंने अहमदाबाद की एक अच्छी डिप्लोमा इंजीनियरिंग कॉलेज में एडमिशन लिया। मुझे कॉलेज के विषय-विकारी वातावरण का असर होते देर न लगी। पहले सेमेस्टर में 60% रिजल्ट आया। दूसरे सेमेस्टर में फेल हो गया और धीरे-धीरे डिप्रेशन आ गया। उससे शांति पाने के लिए मैं कुसंग रूपी कीचड़ लगाता गया, लेकिन फिर हर एक सेमेस्टर में फेल होने लगा। अंत में महामुसीवत से फाइनल वर्ष में आया और उसी वर्ष में नीरू माँ से ज्ञान लिया।

अचानक ही एक दिन मुझे ख्याल आया कि मेरी पढ़ाई पूरी हो पाएगी या नहीं? मैं क्या करूँगा? मेरे पापा का कोई व्यवसाय भी नहीं था, जिसे मैं सँभाल लेता। पापा तो गवर्नमेन्ट नौकरी करते थे, इसलिए अन्य कोई अपेक्षा नहीं रख सकता था। जो कुछ भी करना था वह मुझे ही करना था। मुझ में बोलने का या और कोई कौशल्य नहीं था। अतः पढ़ाई के अलावा और कोई विकल्प ही नहीं था। मुझे बार-बार लगता कि यह सब हुआ कैसे? स्कूल में फेल होना तो दूर, कभी कम मार्क्स भी नहीं आए। तो अब मुझ में कौन सा बदलाव आ गया? वास्तव में तो कुसंग और विषय-विकार के कारण मेरा चित्त फ्रेक्चर हो गया था और ग्रास्पिंग पावर खत्म हो चुकी थी, इसलिए सुबह से शाम तक भले ही किताब खोलकर बैठा रहता, लेकिन एक पृष्ठ भी पलटता नहीं था और एक घंटे में दस पृष्ठ पढ़ लिए हों, फिर भी उसमें से ग्रास्प कुछ भी नहीं कर पाता था। तब समझ में आ गया कि विषय-विकार के चिंतन से ग्रास्पिंग पावर कम हो गई है।

ज्ञान लेने के थोड़े समय बाद पूज्यश्री के “ब्रह्मचर्य से संबंधित” सत्संग में गया। ब्रह्मचर्य की बात मेरे काम की है ऐसा लगा। इस विषय-विकार से बाहर निकलूँगा तो ही सब वापस मिलेगा ऐसा समझ में आ गया। बस, तब से ब्रह्मचर्य की ओर खिंचाव बढ़ने लगा और मैं ब्रह्मचर्य के शिविर और सत्संग में जाने लगा। मुझे नीरू माँ और पूज्यश्री के प्रति अहो! अहो! होने लगा। पूज्यश्री के सत्संग के बाद मैंने विषय-विकारी दोषों के प्रतिक्रमण और रोज़ ब्रह्मचर्य की किताब पढ़ना शुरू किया। इस वजह से एक ओर अच्छे मार्क्स से डिप्लोमा इंजीनियरिंग पूरा किया और दूसरी ओर अच्छी नौकरी भी मिल गई। इसके बाद जीवन में कभी निष्फलता नहीं मिली। कुछ समय बाद मैं अडालज आ गया और नीरू माँ को समर्पित हो गया। तब नीरू माँ ने विधि कर दी, उसके बाद कभी भी विषय विकारी दोषों के विचार नहीं आए।



# महानुभाव,

## जिनका जीवन ब्रह्मचर्य के प्रभाव से खिला

इस अंक में हमने ब्रह्मचर्य के बारे में काफी चर्चा की। चलो, अब हम दुनिया के प्रभावशाली एवं महान व्यक्तियों का, ब्रह्मचर्य के बारे में मंतव्य जानें।

### लीओनार्डो द विन्ची

लीओनार्डो का जन्म 95 अप्रैल, 1452 में इटाली में हुआ। वे एक महान गणितशास्त्री और वैज्ञानिक होने के साथ-साथ कला में भी निपुण थे। मोनालिसा, द लास्ट सपर, द विट्रुयन मेन, लेडी विद एन अरमाइन वगैरह उनकी कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। और उनकी अदभुत एकाग्रता का कारण था उनके जीवन में ब्रह्मचर्य का आचरण।



### महात्मा गाँधी

महात्मा गाँधी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि, जब वे 38 वर्ष के थे, तब उन्हें आंतरिक आवाज़ सुनाई दी कि आध्यात्मिक प्रगति के लिए संपूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्य है। गाँधी जी निःस्वार्थ भाव से सेवा करते थे, हर रविवार के दिन मौन रहते थे, रोज़ प्रार्थना करते, भगवद् गीता का अध्ययन करते और यम-नियम, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य वगैरह का सतत् पालन करते थे। इन सब चीज़ों का पालन करते-करते उनकी समझ में आ गया था कि, “जब तक संपूर्ण ब्रह्मचर्य नहीं है, तब तक आगे की प्रगति नहीं होगी।” इस विषय पर गाँधी जी ने अपनी पत्नी कस्तूर बा के साथ चर्चा की और वे भी ब्रह्मचर्य के लिए सहमत हो गए। उस समय वे 38 या 39 वर्ष के थे और तब से लेकर 79 की उम्र तक यानी 40 से भी ज्यादा सालों तक उन्होंने संपूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन किया। उनकी महान सफलता का कारण, उनकी यह तपस्या ही थी। महात्मा गाँधी ने अहिंसा के शस्त्र से भारत को अंग्रेज़ों की गुलामी से मुक्त कराया, जो कि एक विश्वा उपलब्धि है।



## रामकृष्ण परमहंस

रामकृष्ण परमहंस का जन्म १८ फरवरी, १८३६ में हुआ था। वे एक सिद्ध पुरुष थे। उनके अनुसार जो बारह साल तक अखंड ब्रह्मचर्य का पालन करता है, उसे विशेष सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। उनके भीतर एक अद्भुत चेतना विकसित होती है, जिसे स्मरण चेतना (शक्ति) कहते हैं जिसके कारण सब कुछ याद रहता है, सब समझ में आ जाता है। जब पुरुष अपनी जातीय ऊर्जा (सेक्स्युअल एनर्जी) को संचित करने में सफल हो जाता है, तब उसकी बुद्धि ब्रह्म का दृश्य प्रतिबिंबित कर सकती है। जो पुरुष इस ब्रह्म के दृश्य का अपने हृदय में वहन करता है, वह पूर्णता को प्राप्त कर सकता है। वह जो भी कार्य करता है उसमें उसे अद्भुत सफलता मिलती है। श्री रामकृष्ण परमहंस के ऐसे विचार थे। स्वामी विवेकानंद उनके कई शिष्यों में से एक हैं।



## निकोला टेस्ला

सेक्स और डेटिंग के बजाय जीवन में बहुत कुछ करने जैसा है। टेस्ला इसका उत्तम उदाहरण हैं, जिन्होंने अपने जीवन में कितना ही कुछ प्राप्त कर लिया था! टेस्ला एक सच्चे एवं दृढ़ आदर्शवादी थे। उनके पास धनी, प्रसिद्ध उद्योगपति बनने का मौका था, लेकिन बिना किसी हिचकिचाहट के, उन्होंने उस मार्ग को नकार दिया और अपने ध्येय को वास्तविक बनाने में समय का उपयोग किया। टेस्ला के लिए “अभ्यास” सामान्य मनुष्य की तुलना में बहुत अलग प्रक्रिया थी। उन्हें किसी भी पुस्तकालय की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। पढ़ी हुई किसी भी पुस्तक का कोई भी पृष्ठ, फॉर्म्यूला, इक्वेशन या लॉगरिदम के टेबल की कोई भी आइटम याद करने के लिए वे अपने दिमाग से करते थे, जिसे याद करते ही उनकी आँखों के सामने आ जाता था। वे अपनी यादशक्ति से पुस्तकों की गिनती कर सकते थे। समय की बचत, जो कि संशोधन के कार्य में संभव हुआ, वह ज़बरदस्त था। उनके पास जो शक्ति थी, उसका रहस्य उनका ब्रह्मचर्य था।

दिसम्बर २०१७

वर्ष : ५, अंक : ८

अखंड क्रमांक : ५६

अक्रम यूथ

# ब्रह्मचर्य



Send your suggestions and feedback at: [akramyouth@dadabhagwan.org](mailto:akramyouth@dadabhagwan.org)

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.

Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.



अक्रम यूथ

२४

दिसम्बर २०१७